'वाया रावलपिंडी' से गुज़रते हुए

-प्रो. रूबी जुत्शी

प्रस्तुत उपन्यास 'वाया रावलपिंडी' शीर्षक स्वयं में ही इतना सशक्त है कि पाठक के मन-मस्तिष्क पर अपनी छाप छोड़ देता है। लेखिका गरिमा गारेखान और अनुवादक रजनीकांत एस.शाह के सफ़ल प्रयासों से यह उपन्यास हिन्दी की गद्य-विधा कथा-साहित्य में उभरकर सामने आया है और अपना स्थान बना लिया है। इस उपन्यास में 'वत्सलभाई' एक डाइबटीज़ के मरीज़ हैं जो एक बार हल्के हार्ट अटैक का शिकार हो चुके हैं। अपनी पुत्री स्तुति के संग अमरीका से दुबई की ओर जा रहे वत्सलभाई हवाई जहाज़ में सीवियर हार्ट अटैक के शिकार हो जाते हैं। अमरीका से दुबई के लिए शुरू हुई उनकी यात्रा रावलपिंडी से लाहौर होते हुए दिल्ली पहुँचती है। अंतर्राष्ट्रीय नियमानुसार पाकिस्तान के रावलपिंडी एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग करके वत्सलभाई को चिकित्सा के लिए अस्पताल ले जाया जाता है। अनजान देश में जहाँ एक ओर स्तुति संघर्षरत है वहीं दूसरी ओर डॉ. अहसान उसका सहयोग करते हुए सदा उसका साथ देता है। डॉ. अहसान के अतिरिक्त सलमा बेगम, शमा, राशिद, महेमूद जैसे पात्रों का उल्लेख कर लेखिका ने साम्प्रदायिक सोहार्दय तथा मानवतावादी दृष्टिकोण को सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया है कि आज भी आम जन में एक-दूसरे के प्रति बैर नहीं है। एक-दूसरे पर अपनी जान न्योछावर कर सकते हैं जो इन पात्रों के माध्यम से सिद्ध हुआ है।

राजनितिक कुटिलता के कारण विभाजन पश्चात् सीमा के दोनों ओर के लोगों के मन में बसे द्वेष और खींचा-तानी के साथ-साथ साम्प्रदायिक सोहार्दयता, अच्छाई, भलाई, मानवीय मूल्यों को भी लेखिका ने बखूबी दर्शाया है। अहसान तथा अन्य लोगों की सहायता से ही अंततः स्तुति अपने पिता के शव के साथ दिल्ली पहुँचती है जहाँ परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में उनका अंतिम संस्कार किया जाता है। अमरीका से दिल्ली तक के सफर 'वाया रावलपिंडी' के दौरान स्तुति आत्मविश्वासी, दृढ़ तथा संसार की हर कठिनाई का सामना करने वाली युवती में परिवर्तित हो चुकी थी। जब नारी को कठोर परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है तो वह हिचकिचाती नहीं है बल्कि अपने आपको उस परिवेश में डालने में सहायक सिद्ध होती है ठीक वही स्थिति स्तुति की भी है। वह भी इस उपन्यास में अपने आपको सिद्ध कर देती है कि वह किसी बलवान पुरुष से कम नहीं है।

इस उपन्यास के मूल में साम्प्रदायिक सोहार्दय, भाईचारा, मानवीय मूल्य, समन्वय, समानता तथा सम्मानता के संदेश को प्रतिपादित किया गया है जो इस उपन्यास की मूल उपलब्धी तथा उद्देश्य है। भाषा सुदृढ है, बड़ी सफलता से अनुवादक ने इसका अनुवाद किया है। पाठकों के लिए यह एक सशक्त मार्ग दर्शक के रूप

में प्रस्तुत हुआ है। आशा है आगे भी ऐसे उपन्यास लिखे जाएँगे जो समाज के लिए मार्गदर्शक होंगे। इसमें शीर्षक की सार्थकता है और यह उपन्यास इस योग्य है कि पुरस्कार द्वारा इसे अलंकृत किया जाए।

-प्रो. रूबी ज़ुत्शी
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर